International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 6, November-December, 2025

नवपाषाण काल में कृषि व्यवस्थाः मध्य गंगा घाटी के संदर्भ मे

डॉ. रेणु महलावत

सहायक आचार्य इतिहास, पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावटी विश्वविद्यालय, सीकर

सारांश

भारत के इतिहास और पुरातत्व में गंगा घाटी का विशेष महत्व है। प्राचीन काल से यह विभिन्न संस्कृतियों का केन्द्र रहा है। गंगा घाटी के मैदान को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा गया है। ऊपरी गंगा घाटी, मध्य गंगा घाटी तथा निम्न गंगा घाटी । इस मैदान का भारतीय उपमहाद्वीप के संदर्भ में विशेष महत्व है। गंगा घाटी के चौरस मैदान का निर्माण हिमालय द्वारा निकलने वाली नदियों से लायी हुई मिट्टी से हुआ है। है। इन गोखुर झीलों का निर्माण गंगा तथा उसकी सहायक नदियों के मार्ग-परिवर्तन के फलस्वरूप परित्यक्त सर्पिल मोड़ों से हुआ है।

कुटशब्दः पुरातत्व, पुरपाषाण काल, मध्य गंगा घाटी, जलवायु, पुरास्थलों

प्रस्तावना

उच्चपुरापाषाण काल में विन्ध्यक्षेत्र की जलवायु में परिवर्तन होने लगा था। इसके प्रमाण यहाँ के नदी अनुभागों से प्राप्त हुए है। बदले हुए परिवेश के कारण सम्भवतः उपकरण निर्माण तकनीकी में परिवर्तन करके, नवीन प्रकार के उपकरणों का निर्माण किया गया। जलवायु में इस क्रान्तिकारी परिवर्तन का प्रभाव गांगेय मैदान पर भी पड़ा, और गंगा उत्तर से खिसक कर दक्षिण में अपनी वर्तमान स्थिति मे चली गयी। अपने मार्ग परिवर्तन के कारण उत्तर में गंगा नदी ने बहुत सी धनुषाकार झीलों का निर्माण कर दिया। कुछ झीलें प्राकृतिक कारणों से भर गयी हैं।

इसी भौगोलिक परिवर्तन तथा साथ ही जनसंख्या वृद्धि के कारण जो निश्चित रूप से विन्ध्यक्षेत्र के पठार का विस्तार पूरा नहीं कर पा रहा था, शायद यही विशेष कारण था कि अब तक जो मानव केवल विन्ध्यक्षेत्र तक ही निवास करता था, उसने गंगा घाटी की ओर निहारा, इस तरह शुरू हुआ गंगा घाटी में मानव प्रव्रजन । धीरे-धीरे और अल्पकालिक अवधि के लिए मानव गंगा घाटी में आकर निवास करने लगा। उसके सामने एक समस्या थी कि अब भी वे उपकरण पत्थर के बनाते थे। गंगा घाटी में पत्थर नहीं था। आवश्यकता आविष्कार की जननी है अब उपकरणों के निर्माण की दिशा में नया प्रयोग प्रारम्भ हुआ। अब हड्डियों के उपकरण बड़ी संख्या में बनने लगे। विन्ध्यक्षेत्र से गंगा घाटी में मानव प्रवेश का सिलसिला वैसे तो 15 हजार ई०पू० के पहले ही प्रारम्भ हो गया था। वह उच्चपुरा पाषाण काल का परवर्ती चरण था। प्रारम्भ में सम्भवतः विन्ध्यक्षेत्र से गंगा घाटी की ओर मनुष्य का आना और कुछ महीनों के बाद विन्ध्यक्षेत्र की ओर पुनः लौट जाना वस्तुनिष्ठ प्रव्रजन रहा होगा। लेकिन धीरे-धीरे तत्कालीन मानव ने गंगा घाटी में ही रहने का निर्णय ले लिया।

गंगा घाटी में कई पुरास्थलों पर गंगा के पुराने कछार के अनुभागो ं में चार जमाव मिलते हैं। सबसे नीचे का जमाव कंकरीली पीली मिट्टी का 4 मीटर मोटा है। इसके ऊपर 3 मीटर मोटा काली मिट्टी का जमाव है। तीसरा 2 मीटर मोटा पोतनी मिट्टी का जमाव है और सबसे ऊपर बलुई मिट्टी का 2 मीटर मोटा जमाव है। गंगा घाटी के इस ऊपरी जमाव में ऊपरी भाग से नीचे तक लघु पाषाण उपकरण प्राप्त होते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि इन उपकरणों का निर्माता मध्यपाषाणकालीन मानव इस क्षेत्र में उस समय आया जब मानव इस ऊपरी बलुई मिट्टी का जमाव प्रारम्भ हुआ था और उसका कार्यकाल इस जमाव के अन्त तक चलता रहा।

नवीन शोधों के आलोक में मध्य पाषाण काल के पहले के भी सांस्कृतिक अवशेष गंगा के मैदान में प्राप्त हुए हैं। इन उपकरणों को उच्च पुरापाषाण काल तथा मध्य पाषाणकाल के संक्रमण काल का माना गया है। ये उपकरण जिस धरातल पर प्राप्त होते हैं, उसके अवलोकन से यह कहा जा सकता है कि यह धरातल गंगा के मैदान का तीसरा जमाव पोतनी मिट्टी का ऊपरी धरातल है। इस धरातल पर सर्वप्रथम पाषाण कालीन मानव मध्य गंगा घाटी में आया।

भौतिक प्रगति के क्षेत्र में नवपाषाण काल के मानव का महत्वपूर्ण स्थान है। इस काल में कृषि एवं पशुपालन सर्वप्रथम प्रारम्भ हुए। नवीन अनुसंधानों के आलोक में कहा जा सकता है कि आखेट एवं संचय से खाद्यान्न उत्पादन तथा पशुपालन के रूप में परिवर्तन क्रमिक गति से धीरे-धीरे हुआ।

20वीं शताब्दी ईसवी के 40वें दशक के समय से लेकर आज तक हुई नवीन खोजों, नये अनुसंधानों के फलस्वरूप नवपाषाण काल के सम्बन्ध में उल्लेखनीय जानकारी प्राप्त हुई है। मानव द्वारा उपयोगी घासों के पौधों से चयन के द्वारा सुधार ऐसे लोगों द्वारा किया गया होगा। जो आवश्यक आवश्यकताओं से ऊपर जीवन यापन कर रहे थे। पश्चिमी एशिया के क्षेत्र से कृषि एवं पशुपालन के प्राचीनतम् साक्ष्य मिलते हैं। क्योंकि यहां पर मौसम की अनुकूलता, उपयुक्त जंगली पौधों तथा पशुओं की उपलब्धता और मानव की उन्नत तकनीकी प्रगति के रूप में इसके लिए अनुकूल एवं अपेक्षित साधन प्राप्त थे।

कृषि तथा पशुपालन का विकास साथ-साथ हुआ या अलग-अलग, निश्चित नहीं है। इतना निश्चित है कि दोनो शीघ्र एक दूसरे के पूरक बन गए, और कृषि तथा पशुपालन की मिश्रित अर्थव्यवस्था ग्राम-जीवन का एक अभिन्न अंग बन गई। कृषि एवं पशुपालन के विकास के बाद भी जंगली जानवरों के शिकार और कन्दमूल तथा फल-फूलादि का संचय होता रहा। कृषि का प्रचलन सभी जगह एक समय नहीं हुआ। दस हजार से छः हजार ई.पू. के मध्य पश्चिमी एशिया के जग्रोस पर्वत क्षेत्र, लेवान्ट (सीरिया, फिलिस्तीन, जार्डन) दक्षिणी तुर्की (टर्की) कृषि तथा पशुपालन प्रारम्भ हुआ।

छठी-पांचवी सहस्त्राब्दी ई.पू. तक उत्तरी अफ्रीका में मिश्र और एशिया में तुर्किस्तान से लेकर सिंध तक के क्षेत्र में कृषि पशुपालन का प्रचलन हो गया था। चीन के कुछ क्षेत्रों में भी लगभग इसी समय कृषि का प्रचलन हो गया था। उपलब्ध तिथि के आधार पर 7वीं सहस्त्राब्दी ई.पू. में लौकी, मटर, तीसरी सहस्त्राब्दी ई.पू. में मक्का उत्पादन हुआ। जौ, गेहूं, दलहन तिलहन आदि के रूप में पश्चिमी एशिया ने मानव को महत्वपूर्ण खाद्यान्न प्रदान किया। दक्षिण पूर्व एशिया से धान तथा अमेरिका से मक्का के रूप में खाद्यान्न उपलब्ध हुए।

झूंसी

झूंसी अथवा प्रतिष्ठानपुर इलाहाबाद जिले में गंगा-यमुना संगम के बायें तट पर इलाहाबाद से 7 किलोमीटर पूर्व में स्थित हैं। यहां पर अनेक टीले हैं किन्तु उन सभी में समुद्रकूप टीला सबसे अधिक ऊँचा एवं सुरक्षित अवस्था में है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, संस्कृति एंव पुरातत्व विभाग पर वी.डी. मिश्र, जे.एन. पाल तथा मानिक चन्द्र गुप्ता के निर्देशन में यहां से 1995, 1999, 2002 एवं 2003 में उत्खनन हुआ है जिसके परिणाम स्वरूप गंगा घाटी के संस्कृति अनुक्रम पर समुचित प्रकाश पड़ा है। चार सत्रों में उत्खनन के फलस्वरूप छः सांस्कृतिक कालों के जमाव, प्रकाश में आए हैं। 2002 में समुद्रकूप टीला पर जब उत्खनन किया गया, उसी समय नव पाषाणिक जमाव प्रकाश में आया। यह जमाव सिर्फ एक मीटर मोटा खोदा जा सका। उत्खनन परती भूमि प्राप्त होने के पहले ही बन्द कर दिया गया। अभी तक झूसी उत्खनन से ज्ञात सबसे निम्नवर्ती संस्कृति, नवपाषाणिक हैं, अतः निम्नतमस्तर अभी पूर्णतः उत्खनित नहीं है। अतः निश्चित रूप से कुछ कह सकना सम्भव नहीं है। चूंकि निकट के क्षेत्र में ही मध्यपाषाणिक स्तर प्रतिवेदित किये जा चुके है, अतः संभावना है कि यहां भी संस्कृति का प्रारम्भ कम से कम मध्य पाषाण काल से हुआ होगा । यहां का सांस्कृतिक क्रम इस प्रकार हैः-

1. मध्य पाषाण काल
2. नव पाषाण काल
3. ताम्रपाषाण काल
4. प्रारम्भिक लौह युग
5. एन.बी.पी. पात्र परम्परा का काल
6. कुषाण काल
7. गुप्तकाल
8. प्रारम्भिक मध्य काल

उत्खनन में डोरी छाप पात्र परम्परा, खुरदुरे पात्र, चमकदार काली पात्र परम्परा, लघु पाषाण उपकरण तथा पशुओं की हड्डियां प्राप्त हुई हैं। धान की भूसी का प्रयोग मिटटी में सालन के रूप में किया गया है। पात्र मोटी बारी के तथा भली-भांति पके नहीं है। बारी का रंग काला है तथा मिट्टी को भली-भांति गूंथा नहीं गया था।

हेतापट्टी

इलाहाबाद जिले में गंगा के बायें तट पर झूंसी और फाफामऊ के मध्य में स्थित है। इस पुरास्थल का भौगोलिक विस्तार एक किलोमीटर उत्तर-दक्षिण तथा एक किलोमीटर पूर्व-पश्चिमी में है। इस पुरास्थल के धरातल पर जो पुरातात्विक साक्ष्य मिले हैं उनके सर्वेक्षण के आधार पर उन्हें नवपाषाणिक, ताम्रपाषाणिक और ऐतिहासिक युग के संस्कृतियों का बोध होता है। सर्वेक्षण के आधार पर 2005 में इस पुरास्थल को चुना गया और उत्खनन के फलस्वरूप नवपाषाणिक धरातल प्रकाश में आया, जिससे मध्य गंगा घाटी के इतिहास में नवीन खोजों के आलोक में एक नया आयाम जोडा जा सका । 2005 में इस पुरास्थल का उत्खनन प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के तत्वाधान में जे.एनपाल एवं मानिक चन्द्र गुप्ता ने किया। उत्खनन के

फलस्वरूप यहां का सांस्कृतिक अनुक्रम इस प्रकार हैः- 1. नव पाषाण काल 2. ताम्र पाषाण काल 3. ऐतिहासिक काल हेतापट्टी के उत्खनन से नवपाषाणिक संस्कृति के विविध पक्षों को उद्घाटित किया है-

1. नवपाषाणिक मृद्भाण्ड
2. पाषाण उपकरण- 1. लघु पाषाण उपकरण, 2. सिल-लोढे, हथोड़े के टुकड़े
3. अधिवास प्रक्रिया के स्पष्ट प्रमाण ।

नवपाषाणिक जमाव से हस्तनिर्मित मृद्भाण्ड मिले हैं, जिसमें डोरीछाप पात्र, खुरदुरे पात्र, लाल पात्र तथा चमकदार लाल पात्र परम्परा के मिले हैं। पात्रों के रिम पर अलंकरण भी किया गया है। प्रमुख पात्र प्रकारों में जार, छिछले और गहरे कटोरे, बेसिन आदि मिले हैं। जानवरों की हड्डियां मिली हैं। फलक, ब्लेड, इन उपकरणों का निर्माण बहुत अच्छे किस्म के पत्थर से नहीं हुआ है। इसके अलावा अधिसंख्य जले मिट्टी के टुकड़े, स्तम्भगर्त, झोपड़ियां के फर्श के साक्ष्य मिले हैं। झोपड़ी के फर्श पर डोरी छाप, खुरदुरे पात्र, जले मिट्टी के टुकड़े, जानवरों की हड्डियां, सिल-लोढे, लघु पाषाण उपकरण मिले हैं।

पुरातात्विक खोजों से ज्ञात होता है कि मध्यगंगा घाटी में उच्चपुरापाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल के प्रमाण मिलते हैं। पिछले चार दशकों में हुए उत्खनन के आधार पर कहा जा सकता है कि मध्यगंगा घाटी में नवपाषाणिक संस्कृति के लोग स्थायी रूप से निवास करने लगे थे। नवपाषाणिक संस्कृति के उत्खनित पुरास्थलों में उत्तर प्रदेश के झुंसी, हेतापट्टी (इलाहाबाद) में, भूनाडीह, वैना(बलिया) में, सोहगौरा , इमलीडीह , गोरखपुर में, लहुरादेवा सन्तकबीर नगर में, इसी प्रकार बिहार में चिरांद चेचर कुतुबपुर वैशाली जनपद में, ताराडीह गया जिले में, सेनुवार रोहतास जनपद में आदि पुरास्थल है। इन पुरास्थलों में नवपाषाणिक संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं जिनमें विभिन्न प्रकार की फसलों के उत्पादन के साक्ष्य मिले हैं। गंगा घाटी के नवपाषाणिक मानव विन्ध्यक्षेत्र के लोगों की तरह विभिन्न प्रकार की फसलों की खेती करते थे। जिसमें चावल, जौ, गेहूं, मूंग, चना, मटर, मसूर इत्यादि के साक्ष्य यहां के पुरास्थलों से प्राप्त हुए हैं। अनाजों के वैज्ञानिक साक्ष्य सेनुवार तथा झूसी से मिले हैं। जबकि विन्ध्यक्षेत्र में टोकवा से इसके साक्ष्य मिले हैं। टोकवा से यह पता चलता है कि यहां पर प्रारम्भिक चावल, जंगली ज्वार की खेती होती थी। सेनुवार के नवपाषाणिक जमाव के दो स्तरों से आनाजों के साक्ष्य मिले हैं जिसमें स्तर ए-1 से चावल और जंगली चौराई, पालक, झारबेली, जंगली चावल, इसके साथ ज्वार, बाजरा, मसूर, मटर, रागी, खेसारी आदि से पता चलता है कि यहां पर उस समय इन फसलों का उपयोग खाद्य सामग्री के रूप में होने लगा था।

कोलडिहवा, महगड़ा तथा टोकवा आदि पुरास्थलों से धान के प्रमाण मृद्भण्डों के सालन में तथा कार्बनीकृत रूप में मिले हैं और चिरांद झूसी, हेतापट्टी से भी जले मिट्टी के टुकड़ों में धान की भूसी के प्रमाण मिले हैं। इन साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि दोनों क्षेत्रों के नवपाषाणिक संस्कृतिक के लोग चावल से परिचित थे। चावल ही इनका मुख्य भोजन था। महगड़ा से प्राप्त मृद्भाण्डों के ठीकरों पर धान के दानों, भूसी तथा पुआल के कार्बनीकृत अवशेष चिपके हुए मिले हैं। कोलडिहवा के उत्खनन की महत्वपूर्ण खोज 'पालतू' प्रकार का चावल था, जिसका परीक्षण विष्णुमित्रे तथा ते-जु-चांग ने किया था। इनके अध्ययन के आधार पर यहां से प्राप्त धान ओरिजा सताइवा प्रकार का था। कोलडिहवा और इन्दारी से ओरिजा सताइवा प्रकार के धान की भूसी मिली है जिससे धान की खेती का प्रमाण मिलता है। तिथिक्रम के आधार पर इसे चावल की खेती का प्राचीनतम् प्रमाण कहा जा सकता है। यह वेवीलोव की इस धारणा की भी पुष्टि करता है कि भारत चावल की जन्मस्थली हो सकती है। चिरांद के नवपाषाणिक लोग गेहूँ और मूँग से भी परिचित थे।

मट्टी के बने हुए घड़े और मटके जिसमें अनाज रखा जाता था, अप्रत्यक्ष रूप से कृषि के प्रचलन का संकेत देते हैं ऐसा लगता है कि चिराद के नवपाषाणिक मानव को कृषि चक्र के बारे में जानकारी थी, क्योंकि खरीफ की फसल में चावल और रबी की फसल में गेहूं और मूंग के प्रमाण मिले हैं। बरसात के बाद नम भूमि में बीज बो दिय जाता था। फसल पक जाने पर उसे पाषाण की हंसिया से काटा जाता था। कृषि प्राथमिक प्रकार की थी। महगड़ा के उत्खनन से बैर की गुठलियां भी प्राप्त हुई है, जिसका प्रयोग खाद्य सामग्री में होता रहा होगा। खाद्यान्न इनकी अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका का निर्वाह करते थे। मध्य गंगा घाटी एवं विन्ध्यक्षेत्र के नवपाषणिक पुरास्थलों के उत्खनन से पशुओं की हड्डियां प्राप्त हुई हैं। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि पशुपालन भी इनकी अर्थव्यवस्था का प्रमुख साधन था। ये लोग भेड़, बकरी, भैंस आदि मवेशियों को पालते थे।

पशुपालन के सम्बन्ध में महगड़ा से प्राप्त पशुबाड़ा विशेष उल्लेखनीय है। आयाताकार पशु बाड़े में मवेशियों में बकरी/भेड़ के खुरों के निशान मिलते हैं। यह 12.5ग्7.5 (उत्तर दक्षिण) लम्बा चौड़ा था। इसमें तीन प्रवेश द्वार मिले हुए हैं। बाड़े के ऊपर किसी प्रकार छाजन नहीं था। बाड़े के भीतर की मिट्टी अपेक्षाकृत अधिक काली थी। इस बाड़े के अन्दर से कोई उपकरण अथवा मृद्भाण्ड के अवशेष नहीं मिले हैं। हेतापट्टी में भी जानवरों की हड्डियां मिली हैं। चिरांद से हाथी, बारहसिंघा, हिरण, गैंडे की हड्डियां प्राप्त हुई हैं। यहां के लोग इन जानवरों का शिकार करते रहे होंगे। क्योंकि हड्डी और श्रृंगा के बने उपकरण से भी पता चलता है कि आखेट का इनके जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रहा होगा। मध्य गंगा घाटी के पुरास्थलों से आवास सम्बन्धी प्रमाण मिले हैं। चिरांद के उत्खनन से उपलब्ध वृत्ताकार अथवा अर्द्ध वृत्ताकार झोपड़ी जिसका व्यास 2 मीटर था तथा जिसकी फर्श को मिट्टी से पीटकर बनाया गया था। झूंसी, हेतापट्टी, लहुरादेवा के उत्खनन से इस संस्कृति के आवास प्रक्रिया पर उल्लेखनीय प्रकाश पड़ता है। नवपाषाणकाल मे यहां के लोग रहने के लिए झोपड़ी का निर्माण करते थे। झूसी और हेतापट्टी से झोपड़ियों के फर्श से साक्ष्य मिले है। नरकुल और बांस के छाप से युक्त जली मिट्टी के टुकड़ों से स्पष्ट है कि दीवालों के दोनों ओर मिट्टी से लीपा गया था। इन झोपड़ियों के छत और दीवाल

स्तम्भों पर आधारित थी। हेतापट्टी से मिल े झोपड़ी के फर्श पर मिट्टी के बर्तन, लघु पाषाण, उपकरण आदि मिले हैं। हेतापट्टी से नव पाषाणिक कुल्हाड़ियां मिली हैं। गंगा घाटी में लहुरादेवा, झुंसी, हेतापट्टी के नवपाषाणिक मानव हाथ से बने मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करते थे। यहाँ धीमी गति से चलने वाले चाक पर बने बर्तन भी मिलते हैं।

मध्यगंगा घाटी की नवपाषाणिक संस्कृति की मुख्य पात्र परम्परा लाल रंग की है, लेकिन भूरे, काले और कृष्णलोहित पात्र भी मिलते हैं। झूसी, हेतापट्टी, से डोरीछाप पात्र, खुरदुरे पात्र और चमकदार लाल पात्र प्राप्त हुए हैं। इनके अलावा चिरांद से ओष्ठयुक्त कटोरे छिद्रयुक्त कटोरे, गोड़े युक्त कटोरे, साधार कटोरे, चम्मच, कलछी आदि मिलते हैं। यहां बर्तनों के ऊपर अलंकरण भी मिलता है। अलंकरण अभिप्रायों में पांच से सात तिरछी रेखायें, संकेन्द्रित अर्द्धवृत्त एवं वृत्त, लहरिया आदि से किया गया है। चिरांद में नवपाषाण काल में पात्रों को पकाने के बाद चित्रित किया जाता था। चिरांद में सेलेटी और कृष्णलोहित पात्रों को पकाने के बाद गैरिक रंग से चित्रकारी की गयी थी। चित्रकला तथा उत्कीर्ण अलंकरण बनाने की परम्परा विन्ध्यक्षेत्र एवं मध्य गंगा के नवपाषाणिक मृद्भाण्डों पर मिलता है। टोटीयुक्त बर्तनों का प्रयोग सम्भवतः पानी और अन्य द्रव्य पदार्थों के लिए किया जाता रहा होगा। जबकि संकरे मुंह वाले बड़े बर्तन अनाजों के संग्रह के लिए किये जाते रहे होंगे। चिरांद के उत्खनन से प्लेट या तश्तरी जैसे बर्तनों की संख्या कम है। जबकि कटोरे, हाण्डी और टोटीदार बर्तन अधिक हैं। इस आधार पर यह अनुमान किया गया है कि इस क्षेत्र की नवपाषाणकालीन संस्कृति का मानव अपने भोजन में तरल पदार्थों का अधिक प्रयोग करता था।

उपरोक्त विवरण से यही प्रतीत होता है कि चिरांद की नवपाषाणिक संस्कृति अधिक विकसित है जबकि विन्ध्यक्षेत्र की नवपाषाणिक संस्कृति अभी भी शैश्वावस्था में है। मध्यगंगा घाटी के सभी पुरास्थलों से छोटे आकार तथा गोल समनान्त त्रिभुजाकार या आयाताकार कुल्हाड़ियां प्राप्त हुई हैं जो इस संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। चिरांद से प्राप्त लघु पाषाण उपकरणों में समानान्तर बाहु वाले ब्लेड, स्क्रेपर, प्वाइण्ट, ब्लेड खांचों वाले ब्लेड, चन्द्रिका, खुरचनी, बाण, छिद्रक तथा बेधक आदि हैं और विन्ध्यक्षेत्र के नवपाषाणिक स्थलों से प्राप्त लघु पाषाण उपकरणों में समानान्तर द्विबाहु ब्लेड, भूथडे पार्श्व ब्लेड, दन्तुरित ब्लेड, तिरछा पाश्वन्ति ब्लेड, शर, बेधक, स्क्रेपर, त्रिभुज, समलम्ब चतुर्भुज, अर्द्धचान्द्रिक तथा ट्रांचेट आदि है। गंगा घाटी में दन्तुरित ब्लेड, त्रिभुज, समलम्ब चतुर्भुज आदि का अभाव है। चिरांद में नवपाषाणिक मानव अपने उपकरणें के निर्माण के लिए चाल्सेडनी, चर्ट, अगेट, कार्नेलियन, क्वार्टज तथा क्रिस्टल आदि पत्थरों का प्रयोग करते थे। मध्य गंगा घाटी की नवपाषाणिक पुरास्थलों से हड्डी एवं श्रृंग पर बने उपकरण बहुत अधिक संख्या में प्राप्त हुए हैं। जो इस संस्कृति की प्रमुख विशेषता है जबकि विन्ध्यक्षेत्र के नवपाषाणिक पुरास्थलों से हड्डी एवं श्रृंग पर बने उपकरणों की संख्या कम है।

महगड़ा, में एकत्र स्कंधित हड्डी के शर प्राप्त हुए हैं। हड्डी के उपकरणों से मध्यगंगा घाटी में नवपाषाण कालीन मानव के विशिष्ट उद्योगों का पता चलता है क्योंकि गंगा के मैदान मे उपकरणों के निर्माण के लिए पत्थरों की कमी थी, इसीलिए बड़े पैमाने पर पशुओं की हड्डियों और सींगों से उपकरणों का निर्माण किया गया। हड्डी के बने उपकरणों में छिद्रक, छेनी, हथौड़ा, सुई, प्वाइंट, पुच्छल एवं खांचेदार बाण, कुदाल, बरमे, भालाग्र और वाणाग्र आदि प्राप्त हुए हैं। बैल के एक कंधे की हड्डी का प्रयोग बेलचे के रूप में किया गया है। चम्पा, सोनपुर, मनेर, ताराडीह, खैराडीह और नरहन से हड्डियों की नोंके और वाणाग्र बहुत बड़ी संख्या में मिले हैं। चिरांद, हेतापट्टी, झुंसी से भी हड्डी के उपकरण मिले हैं। इन उपकरणों का उपयोग अधिकतर शिकार में किया जाता था। इनका खेती में जमीन खोदने के लिए इस्तेमाल होता था। हड्डी की एक निहाई भी मिली है। कृषि की प्रथम उत्पत्ति विन्ध्यक्षेत्र के नवपाषाणिक संस्कृति से हुई, जिसका सम्बन्ध आखेट एवं संचय से खाद्यान्न उत्पादन तथा पशुपालन के रूप में परिवर्तित हो गया। यह विकसित होकर विन्ध्यक्षेत्र से मध्य गंगा घाटी में धीरे-धीरे फैल गयी। दोनों क्षेत्रों के उत्खनित पुरास्थलों से इसके साक्ष्य भी मिलते हैं ।

विन्ध्यक्षेत्र एवं गंगाघाटी के उत्खनित सभी पुरास्थलों से प्राप्त कार्बन तिथियों के आधार पर नवपाषाणिक संस्कृति को 8वीं सहस्त्राब्दी ई.पू. में रखा जा सकता है। पुरातात्विक साक्ष्य से ज्ञात होता है कि गांगेय मैदान विन्ध्यक्षेत्र का ऋणी है। क्योंकि साक्ष्यों से यह पता चलता है कि विन्ध्यक्षेत्र में मध्यपाषाण काल में विभिन्न सांस्कृतिक अवशेष जैसे-मृद्भाण्ड, लघुपाषाण उपकरण, खाद्य पदार्थ का संग्रहण और आवास से पता चलता है कि मध्यगंगा घाटी में हुए प्रव्रजन के द्वारा ये सभी सांस्कृतिक प्रमाण गंगा घाटी में आ गये। धीरे-धीरे यहां के मानव ने नवपाषाण काल में कृषि एवं पशुपालन का विकास कर लिया। अनेक प्रकार के सांस्कृतिक पुरावशेष जैसे हस्तनिर्मित मृद्भाण्ड, आखेट, पशुपालन करना, खाद्य उत्पादन उपकरण, आभूषण, एव ं झोपड़ियों आदि की अधिकता, यह स्पष्ट संकेत करते हैं कि विन्ध्यक्षेत्र एवं गंगा मैदान की नवपाषाणिक समाज पूर्णतः आत्म निर्भर था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. मिश्रा, वी.डी. 1988 इलाहाबाद जनपद में प्रागैतिहासिक पृष्ठभूमि
[2]. शर्मा, जी.आर. 1973ः मेसोलिथिक, लेक कल्चर्स इन दि गंगा वैली, प्रोसिडिंग ऑफ दि प्रीहिस्टारिक सोसायटी वाल्यूम-39
[3]. शर्मा जी.आर. 1975ः सीजनल माइग्रेशन एण्ड मेसोलिथिक लेक कल्चर्स ऑफ दि गंगा वैली, के.सी. चटोपाध्याय, वाल्यूम-9
[4]. पाण्डेय, जे.एन. 2009 : पुरातत्व विमर्श
[5]. मिश्रा, बी.डी., पी. वी. मिश्रा, जे.एन. पाण्डेय 1995-96ः ए प्रीलिमनरी रिपोर्ट ऑफ दि इक्सकैवेशन एट झूंसी, 1995
[6]. मिश्रा, बी.डी., जे.एन. पाण्डेय, एम.सी. गुप्ता 1998-99ः फरदर एक्सकेवेशन एट झूंसी-1998 प्राग्धारा-9,43-49.
[7]. मिश्रा, बी.डी., पी.वी. मिश्रा, जे.एन. पाण्डेय, एम.सी. गुप्ता 1999-2000ः फरदर एक्सकेवेशन एट झूंसी, प्राग्धारा-10

[8]. मिश्रा, बी.डी., जे.एन. पाल, एम.सी. गुप्ता 2002- 2003ः फरदर इक्सकेवेशन ऑफ झूंसी, इवीडेन्स ऑफ नियोलिथिक कल्चर, प्राग्धारा-13
[9]. मिश्रा, बी.डी., जे.एन. पाल, एम.सी. गुप्ता 2004ः सिगनीफिकेन्स ऑफ रिसेन्ट इक्सकेवेशन एट टोकवा इन द, विन्ध्य एण्ड झूंसी एट, गंगेटिक प्लेन, जरनल आफ हिस्ट्री एण्ड स्टडीज इण्टरडिसिप्लीनरी आर्कियोलॉजी-1(1)
[10]. पाल, जे.एन., एम.सी. गुप्ता 2005ः इक्सकेवेशन एट हेतापट्टी (इलाहाबाद) डिस्ट्रिक्ट ऑफ प्रीलिमिनरी आबजर्वेशन, जरनल आफ इण्टरडिसिप्लीनरी स्टडीज इन हिस्ट्री एण्ड आर्कियोलॉजी, 2(2) 325-330 प्राग्धारा 2007-8 पृष्ठ-274-275.
[11]. सिंह पी., ए0के0 सिंह 1997-1998ः ट्राएल इक्सकेवेशन एट भूनाडीह, डिस्ट्रिक्ट बलिया, यू.पी.. प्राग्धारा-8,12-29
[12]. सिंह पी. एण्ड ए .के. सिंह 1995-1996ः ट्राएल इक्सकेवेशन एट वैना डिस्ट्रिक्ट बलिया, यू.पी., प्राग्धारा-6,41-61.